सं. भ्रो.वि /हिसार/128-83/59309---चूकि हरियाण। के राज्यपाल की राय है कि मैं. सुपरीट डैंट गर्वनमेंट लाईव स्टाक फाम, हिसार 2 निदेशक, भारत ग्रास्ट्रेलियन कैटल बि्डिंग प्रोजैक्ट, हिसार, के श्रीमक श्री रामजी लाल तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट-करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-7/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ग्रो. (ई)श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनयम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री रामजी लाल की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदर है ?

स. ओ.वि./ग्रम्बाला/303-83/59315.—चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज तंगोर को.केडिट एण्ड सर्विस सोसाइटी लि., तंगोर, तह. थानेसर, जिला कुरक्षेत्र के श्रमिक श्री हरपाल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचनां सं. 11495-जी-श्रम/57/11245. दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के भ्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री हरपाल सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकटार है ?

सं. श्रों.वि./श्रम्बाला/293-83/59321.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. सुमेरू एण्ड सेहरी 219, एच.एम. ही. एन्सलरी, इन्डस्ट्रीयल इस्टेट, पंचकुला, के श्रमिक श्री शम्शेर सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है।

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री शमशेर सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो.वि श्रम्बाला 287-83 59327. -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि कार्यकारी श्रभियन्ता, टयूबवैल डि. नं. 1, एम श्राई टी.सी. श्रम्बाला शहर, के श्रमिक श्री रणजीत कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रीधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 5415-3 श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून,

1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं 11495-जी-श्रम/57-11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के वीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :---

क्या श्री रणजीत कुमार की सेवार्यों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं स्रो वि /भिवानी / 45-83 / 59333 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि हरियाणा राज्य लघु सिंचाई नलकूप निगम, सैक्टर 17, चण्डीगढ़ 2 कार्यकारी स्रभियन्ता, हरियाणा राज्य लघु सिंचाई नलकुप निगम, डिविजन नं. 1, रिवाड़ी, के श्रमिक श्री शम्भु राम तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई सौद्योगिक विवाद है;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं:

इस लिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रधिसूचना सं. 3864-ए एस ग्रो (ई)श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:——

क्या श्री शम्भू राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि /रोहतक/ 199-83/59341 -- चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि में. हरियाणा कैमीकल इण्डस्ट्रीज, एम. ग्राई ई., बहादुराढ़, के श्रमिक श्री भूमि केश्वर तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीबोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधसूचना स. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रिधसूचना सं. 3864-ए.एस.श्रो.(ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायलय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संवन्धित नीचे लिखा मामला नमायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री भूमि केण्वर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा,ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./जी.जी.एन/119-83/59348---चूंकि हरियाणा के राण्ज्यपाल की राय है कि में. हरियाणा सिपटीक गलास, रवी नगर, वसई रोड, गुड़गांव के श्रीमिक श्री मोती तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है।

भीर चृक्ति हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत्, निर्विष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

.. इसलिए, ग्रव, ग्रीद्यागिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसुचना सं 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की घारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री मोती की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.ग्रो.वि /हिसार/77-82/59355.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. हांसी को ग्रो.परेटिव स्पीनिंग मिल्ज, हांसी (हिसार) के श्रीमिक श्री सतपाल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीखोगिक विवाद है;

श्रौर वृंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए एस श्रो (ई) श्रम-70/13648, दिगांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उत्तसे सुसंगत या उत्तसे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री सत पाल सिंह की सेवाओं का सामापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./ग्रम्वाला/335-83/59361.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैस जे गुलाव प्रिन्टिंग प्रैस, 1539, कच्चा बाजार, ग्रम्वाला फैन्ट के श्रमिक श्री करम चन्द तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य उसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग्नग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उनत अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद अस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिल्ट करते हैं, जो कि उन्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:-

नया श्री करम चन्द की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./सोनीपत/205-83/59367.—च्कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. कोनारका इन्डस्ट्रीज एम-4 इण्ड-स्ट्रीयल एरिया, सोनीपत के श्रमिक श्री शाम सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रय, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खुण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ग्रो (ई)श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतंक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त ग्राहकों प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री शाम सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहरा का दुकदार है ?

'सं. ग्रो.वि./एफ.डी./136-83/59374.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज सुपर ग्राटो इण्डिया 'लाट नं. 50, सैवटर-6, फरीढाबाद के श्रमिक श्री खुशहाल सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है ;

श्रीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांक्रनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, श्रौद्यागिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7क के श्रंधीन ग्रौद्योगिक ग्रधिकरण, हरियाणा, फरीदावाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादण्स्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रथन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं :--

क्या श्री खुलहाल सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?